ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय डाक टिकट

Ms. Abhilasa Kumari Singh[1], Prof. Dr. Alpana Dubhashe[2]

[1]Research Scholar, History, PMCOE Govt Madhav College ujjain
[2]HOD & Professor, History, PMCOE Govt Madhav College ujjain

सार (Abstract)

भारतीय डाक टिकटों का इतिहास भारत की डाक व्यवस्था, प्रशासनिक विकास तथा सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। डाक टिकट केवल डाक शुल्क के भुगतान का माध्यम नहीं रहे हैं, बल्कि वे राष्ट्र की ऐतिहासिक घटनाओं, महान व्यक्तित्वों, सांस्कृतिक विविधता, कला, विज्ञान, स्वतंत्रता संग्राम तथा राष्ट्रीय उपलब्धियों के सशक्त प्रतीक भी हैं। यह शोध-पत्र भारतीय डाक टिकटों के उद्भव, विकास, मुद्रण तकनीक, विषय-वस्तु, कलात्मक स्वरूप तथा उनके ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक महत्व का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। साथ ही, फिलेटली (डाक टिकट संग्रह) के विकास तथा भारतीय डाक टिकटों की राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उपयोगिता का भी अध्ययन किया गया है। यह शोध ऐतिहासिक एवं वर्णनात्मक पद्धति पर आधारित है तथा प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों के विश्लेषण के माध्यम से भारतीय डाक टिकटों की विकास यात्रा का समग्र मूल्यांकन प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द (Keyword's): भारतीय डाक टिकट, सिंध डाक टिकट, फिलेटली, डाक व्यवस्था, इतिहास, सांस्कृतिक विरासत, भारत।

शोध पद्धति (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध-पत्र में ऐतिहासिक अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया है। अध्ययन की प्रकृति गुणात्मक, वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक है। शोध हेतु मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों—पुस्तकों, शोध-पत्रों, डाक विभाग के प्रकाशनों, अभिलेखों, फिलाटेली साहित्य तथा आधिकारिक वेबसाइटों—का उपयोग किया गया है। भारतीय डाक टिकटों का कालक्रमानुसार अध्ययन करते हुए उनके ऐतिहासिक विकास, मुद्रण तकनीक, विषय-वस्तु तथा सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय महत्व का विश्लेषण किया गया है। संकलित तथ्यों का तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक परीक्षण कर निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं।

परिचय (Introduction)

भारतीय डाक टिकट केवल डाक व्यवस्था का साधन नहीं है, बल्कि वह देश के इतिहास , संस्कृति और सामाजिक चेतना के नन्हे कागजी राजदूत भी है । यदि किसी को बहुत कम समय में भारत की वास्तविक तस्वीर देखनी हो तो वह भारतीय डाक टिकटों का अवलोकन करना श्रेष्ठ है । इन टिकटो में कश्मीर से कन्याकुमारी तक की भौगोलिक विविधता, समुद्री दीपों से लेकर पहाड़ो तक की प्राकृतिक संपदा, स्वतंत्रता आंदोलन के नायक, सैनिक, किसान मजदूर, वैज्ञानिक, लेखक, पत्रकार और देश के निर्माण में लगे असंख्यक लोगों की झलक मिलती है । भारतीय डाक टिकट सामाजिक-आर्थिक बदलावो और राष्ट्रीय चेतना का जीवंत दस्तावेज है ।

डाक टिकटों की छपाई मुख्यतः चार प्रमुख मुद्रण प्रणालियों द्वारा की जाती थी-

1. टाइपोग्राफी :- टाइप या लेटर प्रेस मुद्रण

2. लिथोग्राफी : - ऑफसेट मुद्रण का आधार
3. एनग्रेविग या इनटेलियो मुद्रण : - उभरा हुआ मुद्रण
4. फोटोग्राव्य : - फोटो-ग्रेवियर मुद्रण |[i]

विश्व का पहला डाक टिकट “पेनी ब्लैक” 6 मई 1840 को ग्रेट ब्रिटेन में जारी हुआ जिस पर महारानी विक्टोरिया का चित्र अंकित था |[ii] इस टिकट की कीमत एक पैनी और रंग काला था , इसलिए यह पेनी ब्लैक नाम से विख्यात हुआ |इस टिकट पर महारानी विक्टोरिया का चित्र बना हुआ था | एशिया महाद्वीप का पहला डाक टिकट 1 जुलाई 1852 को भारत के तत्कालीन सिंध प्रांत (वर्तमान पाकिस्तान) में जारी किया गया था | इसे “सिंध डाक टिकट” कहा जाता है|[iii] इन टिकटो के मध्य भाग में ईस्ट इंडिया कंपनी का चौड़े तीर का चिन्ह अंकित था तथा उन पर बहुरंगी उभरा हुआ डिजाइन बनाया गया था | प्रारंभ में ये टिकट सिंदूरी रंग के छापे जाते गये, इसके बाद सफेद कागज पर भी टिकट जारी किया गए किन्तु सफलता नहीं मिली | अंततः सफेद कागज पर नीले रंग की उभरी हुई छपाई वाले टिकट प्रचलन में आए |[iv] उस समय सिंध की डाक व्यवस्था अत्यंत कमजोर थी, इसलिए इस नये टिकट के माध्यम से संचार व्यवस्था को सुधारने का प्रयास किया गया | यह टिकट सिंध के चीफ कमिश्नर सर बार्टर फ्रेयर द्वारा जारी किया गया था | सिंध के अलावा करांची-बम्बई डाक मार्ग पर भी इन टिकटों का उपयोग किया जाता था | सन 1854 में इसे आधिकारिक रूप से वापस ले लिया गया, लेकिन कुछ स्थानों पर इसका उपयोग सन 1866 तक चलता रहा |

पैनी ब्लैक

सिंध के बाद अब भारत के लिए आम टिकट जारी हुए | कलकत्ता टकसाल से सर्वप्रथम “सिंह और ताड़ वृक्ष” चित्र वाले ये टिकट सन 1853 में जारी किये गए | कलकत्ता टकसाल की मशीनरी अधिक मात्रा में टिकट छपने में असमर्थ थी | इसलिए यह डिजाईन बहुत अधिक काम में नही आया | इसके बाद सरकार ने इस डिजाईन को ख़ारिज करते हुए महारानी विक्टोरिया की तस्वीर वाले टिकटों को ही छापने का फैसला किया |

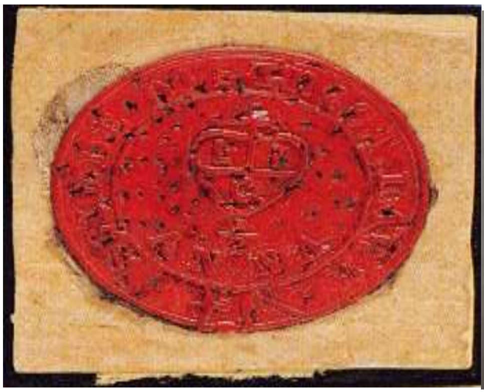

सिंध डाक टिकट

सिंह और ताड़ वृक्ष

1 अक्टूबर सन 1854 को महारानी विक्टोरिया की तस्वीर वाले जारी हुए डाक टिकटों ने भारतीय डाक टिकटों के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा । कलकत्ता टकसाल में हाथ से चलाये जानेवाली लिथोग्राफ तकनीक से छपे इन टिकटों का डिजाईन तत्कालीन समय के अनुसार काफी सुन्दर था । थोड़ी सी असावधानी से उस समय के प्रेस में एक दिलचस्प घटना घट गयी और चार आना मूल्यवाले कुछ टिकटों पर महारानी का चित्र उल्टा छप गया था । डाक टिकट संग्रहकर्ताओ के बीच ये टिकट काफी चर्चित व मूल्यवान है।

1 अक्टूबर 1854 को कलकत्ता डाकघर ने पहली बार भारतीय डाक टिकटों की बिक्री आरंभ की । अगले वर्ष नवंबर 1855 में डाक टिकटों की छपाई का कार्य लंदन स्थित "थॉमस डे ला रू एंड कंपनी" को सौंप दिया गया । इस कंपनी ने आधा आना, एक आना, दो आना, चार आना तथा आठ आना मूल्यवर्ग के टिकट मुद्रित किए ।[v] 1926 में नासिक में इंडिया सिक्योरिटी प्रेस की स्थापना हुई और डाक टिकटो की छपाई का कार्य भारत में ही होने लगा ।[vi]
यह भी एतिहासिक तथ्य हैं कि भारतीय डाक टिकटों में सन 1854 से 1931 तक महारानी विक्टोरिया, सम्राट एडवर्ड सप्तम , जोर्ज पंचम तथा जोर्ज शस्तं के चित्र ही छाए रहे । इसके बाद भारत की नयी राजधानी नयी दिल्ली के उद्घाटन के खास मौके पर पहली बार डाक तार विभाग ने 9 फ़रवरी 1931 को विशेष चित्रात्मक स्मारक डाक टिकट जारी कर एक नया अध्याय शुरु किया । ये टिकट दिल्ली की इमारतों से ही सम्बंधित थे – पुराना किला (चौथाई आना दाम), युद्ध स्मारक इंडिया गेट (आधा आना) , वायसराय हाउस मौजूदा राष्ट्रपति भवन (दो आना) के टिकटो पर इन स्मारकों के साथ जोर्ज पंचम की तस्वीर प्रमुखता से छापी गई थी ।

औपनिवेशिक काल में ईस्ट इंडिया कंपनी से अलग भी एक डाक व्यवस्था प्रचलित थी जो देशी रियासतों की थी । कई देशी रियासतों ने न केवल अपनी स्वतंत्र डाक सेवाएं चलाई बल्कि अपने स्वयं की डाक टिकटे भी चलाई । इन देशी

International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)

E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

रियासतों को मुख्यतः हम दो भागों में बांट सकते हैं- 1)संधि राज्य (convention states) एवं 2) सामंती राज्य (feudatory states) | कन्वेंशन स्टेट के अंतर्गत मुख्यतः वे राज्य आते थे जिन्होंने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया पोस्ट के साथ एक औपचारिक डाक समझौता (postal convention) किया था | इनमे केवल 6 रियासतें शामिल थी- चंबा, फरीदकोट, ग्वालियर, जींद, नाभा व पटियाला |[vii] इन राज्यों के पास अपने अलग डिज़ाइन के टिकट नहीं थे | ये ब्रिटिश ईस्ट इंडिया पोस्ट के टिकटों का ही उपयोग करते थे जिन पर उनके राज्य का नाम ओवरप्रिंट यानि ऊपर से छापा जाता था | इन टिकटों की सबसे बड़ी विशेषता यह थी की ये पूरे ब्रिटिश भारत में डाक भेजने के लिए मान्य थे |

संधि राज्य (convention states) के डाक टिकट

इसके ठीक विपरीत जितने भी सामंती स्टेट थे उन्होंने अपनी स्वतंत्र डाक व्यवस्था बनाये रखने और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया पोस्ट के साथ कोई समझौता नहीं किया | इन रियासतों में मुख्यतः अलवर, बड़वानी, भोपाल, फरीदकोट, हैदराबाद, इंदौर, मोरबी, ओरछा, त्रावनकोर जैसी लगभग चालीस रियासतों का नाम आता है | चूंकि ये टिकट अक्सर स्थानीय और पुरानी मशीनो से छपे जाते थे , इसलिए ये बहुत अधिक आकर्षक व सुन्दर नहीं होते थे | इन टिकटों को संग्रहनकर्ता "अगलीज"(uglies) भी कहते हैं | इन टिकटों का उपयोग केवल राज्य की सीमा के भीतर ही किया जा सकता था | यदि पत्र रियासत की सीमा के बहार भेजना हो तो उसपर ईस्ट इंडिया कंपनी का टिकट भी लगाना पड़ता था |

International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

सामंती राज्य (feudatory states) के डाक टिकट

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय डाक टिकटों का स्वरुप और वैचारिक दिशा पूरी तरह बदल गई । ब्रिटिश काल में डाक टिकटों पर सम्राट और सम्राज्ञी के चित्र प्रमुख थे, किंतु आजादी के बाद इसके स्थान पर राष्ट्रीय विषयों को प्रमुख्ता दी गई | भारतीय टिकट अब देश के इतिहास, भूगोल, वैज्ञानिक ,चित्रकारों, महान व्यक्तियों , चित्रकारो, सांस्कृतिक उपलब्धियों आदि जैसे विविध विषयों का जीवंत चित्रण करने लगे । भारतीय डाक तार विभाग द्वारा 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र भारत के प्रथम डाक टिकट "जय हिंद" श्रृंखला के नाम से विरूपित किये गए | इन टिकटो के ऊपर देवनागरी व रोमन लिपि में लिखा गया | इनका उपयोग स्वतंत्रता दिवस तथा उसके बाद की डाक पर मुहर लगाने के लिए किया गया |इसके बाद 21 नवंबर 1947 को "जय हिंद" श्रृंखला के इन टिकटों को जारी किया एवं 22 जुलाई 1947 को संविधान सभा द्वारा अपनाये गए राष्ट्रीय ध्वज का अंकन भी इन टिकटों पर किया गया | "जय हिंद" श्रृंखला के इन तीन स्मारक टिकटों ने स्वतंत्र भारत के राष्ट्रीय प्रतीको को प्रदर्शित किया |इन टिकटो की लोकप्रियता इतनी अधिक थी कि 15 दिसंबर 1947 को केवल मुंबई से 43000 रूपए मूल्य के टिकट बिके |[viii]

स्वतंत्र भारत के प्रथम डाक टिकट

भारतीय डाक टिकटों पर सम्राट या सम्राज्ञी के अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति का चित्र पहली बार सन 1948 में अंकित किया गया | 15 अगस्त 1948 को महात्मा गांधी की स्मृति में चार विशेष डाक टिकट जारी किए गए जिन पर गांधीजी का चित्र अंकित था |[ix] यह भारतीय फिलाटेली के इतिहास में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन था, जिसने औपनिवेशिक प्रतीकों से हटकर राष्ट्रीय नायकों का सम्मान देने की परंपरा की शुरुआत की | भारतीय डाक टिकटों पर प्रदर्शित होने वाली प्रथम भारतीय महिला मीराबाई थी | उनके सम्मान में यह डाक टिकट 1 अक्टूबर 1952 को जारी किया गया था | इसपर हिंदी में "मीरा' छपा था | यह भारत की नयी फोटोग्रव्योर छपाई तकनीक से निर्मित पहली श्रृंखला का हिस्सा था |

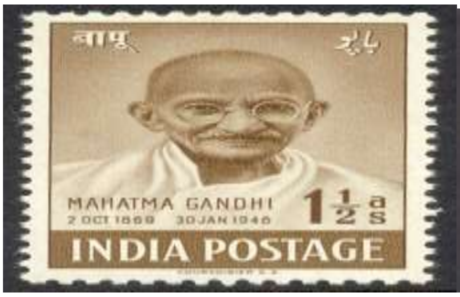

सन 1947 में भारत का विभाजन हुआ और उसे समय पाकिस्तान के पास अपना मुद्रण तंत्र नहीं था | इसलिए 1 अक्टूबर 1947 से ब्रिटिश भारत के सामान्य और सेवा टिकटों पर “पाकिस्तान” शब्द अधिमुद्रित (ओवर प्रिंट) करके उपयोग किया गया | इन टिकटों की छपाई भारतीय प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक में हुई थी | आगे चलकर पाकिस्तान ने 9 जुलाई 1948 को अपने पहले डाक टिकट को “पाकिस्तान जिंदाबाद” नारे के साथ जारी किया, जो भारतीय टिकटो की शैली से प्रेरित थे|[x]

भारतीय डाक टिकटों को सामान्यतः दो प्रमुख श्रेणियां में विभाजित किया जाता है-

1. नियत (Definitive) डाक टिकट: - यह नियमित डाक शुल्क के लिए छापे जाते हैं और इनका डिजाइन साधारण तथा किफायती होता है
2. स्मारक (Commemorative) डाक टिकट: - यह विशेष अवसरों ,व्यक्तियो , घटनाओं और विषयों के सम्मान में जारी किए जाते हैं| उनकी डिजाइन और प्रस्तुति पर विशेष ध्यान दिया जाता है और यह संग्रहकर्ताओं के लिए अत्यधिक आकर्षक होते हैं |[xi]

डाक टिकटों का संग्रहण “फिलेटली” कहा जाता है | इस शब्द का निर्माण 1868 में फ्रांसीसी विद्वान जॉर्ज हैप्पीन ने किया था | यह यूनानी मूल के दो शब्दों “फिलोस” (प्रेस) और “इटेलिया” (शुल्क से मुक्ति) से मिलकर बना है, जिसका आशय है वह टिकट जो प्रेषक द्वारा चिपकाये जाने पर प्राप्तकर्ता को वितरण शुल्क से मुक्त कर देता है|[xii] इसे प्राय “शौको का सम्राट” भी कहा जाता है | विश्व के विभिन्न देशों ने समय-समय पर विविध विषयों- इतिहास, संस्कृत, विज्ञान, प्राकृतिक, महापुरुषों और महत्वपूर्ण घटनाओं पर टिकट जारी किए हैं | जैसे-जैसे कोई डाक टिकट पुराना और दुर्लभ होता जाता है, उसका मूल्य भी उतना ही बढ़ता जाता है | उदाहरणस्वरूप विश्व का प्रथम डाक टिकट पेनी ब्लैक अपने दुर्लभता और ऐतिहासिक महत्व के कारण अत्यंत मूल्यांकन माना जाता है |[xiii]
यह शौक किसी भी आयु में अपनाया जा सकता है | मनोवैज्ञानिकों के अनुसार टिकट संग्रह जिज्ञासा को प्रोत्साहित करता है, विश्लेषणात्मक क्षमता को विकसित करता है और सामाजिक संबंधों को सामाजिक संबंधों को सुदृढ़ बनता है | अतीत में यह राजघरानो का भी प्रिय शौक रहा है, उदाहरणस्वरूप इंग्लैंड की रानी विक्टोरिया के पास भी डाक टिकटों का विशाल संग्रह था |[xiv]
आज टिकट संग्रहण विश्वव्यापी बन चुका है | लोग केवल आर्थिक मूल्य के कारण ही टिकट संग्रहण नहीं करते बल्कि उसके डिजाइन, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, किसी विशेष घटना की स्मृति तथा मुद्रण विशेषताओं के कारण भी उन्हें सहेजते है | वास्तव में डाक टिकट किसी राष्ट्र का ऐसा झरोखा है जिसमें विश्व उस देश के सांस्कृतिक, प्रकृति, इतिहास, व्यापार, कला और शिल्प परंपराओं का परिचय प्राप्त करता है |[xv]
समय के साथ-साथ डाक टिकट संग्रहण केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रहा बल्कि यह अध्ययन और अनुसंधान का विषय भी बन गया है | कई संग्रहणकर्ता टिकटों के माध्यम से विभिन्न देशों के भूगोल इतिहास और सांस्कृतिक विविधता का महान अध्ययन करने लगते हैं | इस प्रकार डाक टिकट ज्ञान विस्तार का सशक्त साधन भी बन जाते हैं |

भारतीय डाक टिकट केवल डाक शुल्क के साधन नहीं. बल्कि राष्ट्रीय स्मृति, संस्कृति और इतिहास के संवाहक है | यह छोटे कागजी टुकड़े भारत की पहचान, विकास और चेतना को विश्वभर में प्रस्तुत करते हैं, इसलिए भारतीय डाक टिकटों को सही अर्थों में "चलते-फिरते सांस्कृतिक दूत" कहा जाता है|

1. डाक टिकट की कहानी- सत्य प्रसाद चटर्जी, अनुवाद प्रेमनाथ चतुर्वेदी, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली, छब्बिश्वी आवृत्ति, 2020, पृ-37,38
2. भारतीय डाक सदियों का सफरनामा- अरविंद कुमार सिंह, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली ,आठवीं अंकित, 2020, पृ-10
3. डाक टिकटों में भारत दर्शन- अरविंद कुमार सिंह, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली, दूसरी आवृत्ति, 2017, पृ-4
4. डाक टिकट की कहानी- सत्य प्रसाद चटर्जी, अनुवाद प्रेमनाथ चतुर्वेदी, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली, छाबीस्वी आवृत्ति, 2020, पृ-18
5. फॉर्म मेल टू ईमेल- के .सी .वी नायर – ब्लू रोज पब्लिकेशन, पहली आवृत्ति, 2018, पृ-68
6. डाक टिकट की कहानी- सत्य प्रसाद चटर्जी, अनुवाद प्रेमनाथ चतुर्वेदी, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली, छब्बिश्वी आवृत्ति, 2020, पृ-20
7. इंडियन पोस्टल स्टाम्प- अंबरीश खुराना, वन्दना पब्लिकेशन, नई दिल्ली, प्रथम आवृत्ति, 2016, पृ- 28,29
8. भारतीय डाक सदियों का सफरनामा- अरविंद कुमार सिंह, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली ,आठवीं अंकित, 2020, पृ-186
9. हमारे डाक टिकट रंग भारत के- अनूप कृष्ण झिंगरन, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रशासन मंत्रालय, भारत सरकार, प्रथम आवृत्ति, पृ-3
10. डाक टिकटों में भारत दर्शन- अरविंद कुमार सिंह, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली, दूसरी आवृत्ति, 2017, पृ-15
11. भारतीय डाक सदियों का सफरनामा- अरविंद कुमार सिंह, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली ,आठवीं अंकित, 2020, पृ-182
12. विंडोज टू फिलेटली – बी .पद्मिनी ,ओलिव पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड ,केरला ,प्रथम आवृत्ति,2005, पृ-17
13. डाक टिकटों में भारत दर्शन- अरविंद कुमार सिंह, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली, दूसरी आवृत्ति, 2017, पृ-4
14. विंडोज टू फिलेटली – बी .पद्मिनी ,ओलिव पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड ,केरला ,प्रथम आवृत्ति,2005,पृ-18
15. डाक टिकट की कहानी- सत्य प्रसाद चटर्जी, अनुवाद प्रेमनाथ चतुर्वेदी, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली, छब्बिश्वी आवृत्ति, 2020, पृ-35